प्राचीन भारत में पशुपालन एवं धार्मिक स्वरूप

अमिताभ कुमार

प्रागैतिहासिक युग में पशु मानव जीवन के अभिन्न अंग थे। आदिमानव ने आरण्य पशुओं को पालतु बनाया तो इस क्रम में उन्हें यह अनुभव हुआ कि इनमें भी अलौकिक शक्ति होती है। यह बात केवल पशु–पक्षियों में ही नहीं बल्कि सर्पो तथा इसी प्रकार के अन्य प्राणियों में भी होती है। आरण्य पशु इनके लिए संकट के भी कारण थे जैसे सिंह, व्याघ्र, हाथी एवं सर्प इत्यादि। अतः उनके क्रोध– निवारण के लिए भी उनलोंगे ने उनकी पूजा आरम्भ की। जंगलों के आधिक्य के कारण सर्पो से भी लोग संकट ग्रस्त थे क्योंकि इनके डंश के कारण उनकी मृत्यु हो जाया करती थी, अतः सर्प–पूजा का प्रचलन हुआ। चिरान्द के प्रागैतिहासिक स्थल से नागों की मिट्टी की अनेक मूर्तियाँ मिली है जितनी की अन्यत्र कहीं भी नहीं मिली है। एच0डी0 संकलिया का विचार है कि प्रागैतिहासिक मानव इनकी पूजा करता था। सिन्धु घाटी के विभिन्न पुजा–स्थलों से प्राप्त मुद्राओं पर भी नागों की आकृतियाँ मिलती है, संभवतः जिनका उपयोग पूजा हेतु होता था। लोथल के बीन मृद्भाणु के टूकड़ों पर प्रत्येक पर दो सर्प बने है। मोहेंजोदड़ों की एक मुद्रा पर देवता के दोनों ओर एक–एक सर्प दिखाया गया है जो परवर्ती काल में बौद्धधर्म से संबंधित शिल्प में नागों के बद्ध को पूजने के अंकन की याद दिलाता है। वैदिक काल में भी नाग–पूजा का प्रचलन था।